## दिनांक 11 जुलाई, 1978

सं० ग्रो० वि०/एफ०डी०/74-86/24069.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० हिन्दुस्तान वैक्यूम ग्लास लि०, 64-ए, ग्रौद्योगिक क्षेत्र, फरीदाबाद के श्रमिक श्री श्रीराम, पुत्र श्री कन्हेया लाल, मकान नं० एफ-32, एन वीजी डबल स्टोरी क्वाटर श्रपोजिट हितकारी पोटरीज इन्डिस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद हथा इसके प्रवन्हकों के वीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीक्षोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की क्षाई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415—3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495—जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादअस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बित नीचे लिखा मामला न्यायिन पंच एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादअस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री श्रीराम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो वि । एफ बी । 10-86/24078 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं कि कन्टोनेन्टल कन्स्ट्रक्सन लि । 14/2, मथुरा रोड़, फरीदाबाद के श्रमिक श्री होसीलदार, पुत्र श्री ग्रली मोहम्मद, गांव कवीलवाहा, डा, हारा जिला देवरिया (यू.पी.) तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

श्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की ग्राम्क्री का कित्रयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415—3—श्रम—68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं० 11495—जी—श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधि-सूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री होसीलदार, की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? .

सं श्रो विवएफ बी व/33-86/24085. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं गुडईयर इण्डिया लि ०; मथुरा रोड़, बल्लवगढ़ के श्रमिक श्री निरन्जन सिंह, मकान नं 549 टाईप-II एन० एच०-4, फरीदावाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिष्ठित्यम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रिष्ठसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिष्ठसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनणय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भयवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री निरन्जन सिंह, की सेत्राओं समापन न्यायोचित तथा ठीक हैं ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?